12

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

परपोते-परपोतियों की योजना बनाकर!

सभी नाती-पोते बड़े महत्वपूर्ण हैं। मेरी बात पर शक हो तो आप उनके दादा-दादी, नाना नानी से पूछ लें। परन्तु निष्पक्षता से कहें तो यह सच है कि दूसरे नाती-पोते दूसरों से बेहतर होते हैं। वे अधिक स्वस्थ, अधिक प्रसन्न, अधिक सफल और सबसे बड़ी बात कि परमेश्वर के राज्य को ढूंढ़ने को पहल देने वाले अधिक होते हैं। अधिक सम्भावना यही है कि विवाह होने पर आप बच्चों की योजना बनाएं और नाती-पोतों के होने की उम्मीद करें। क्या निष्पक्ष दृष्टिकोण से यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके नाती-पोते होंगे, आप कुछ करने की कोशिश कर सकते हैं ?

पहले यह देखते हैं कि नवविवाहितों को नाती-पोतों के होने पर क्यों विचार करना चाहिए। (1) वे सम्भवतया निकट भविष्य में माता-पिता बन जाएंगे। अधिकतर दम्पत्तियों के आज नहीं तो कल बच्चे हो ही जाएंगे। वास्तव में बच्चों का होना विवाह के उद्देश्यों में से एक है। परमेश्वर ने प्रथम दम्पत्ति से कहा था, ''फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ'' (उत्पत्ति 1:28)। इसी प्रकार परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों से आज भी यही चाहता है कि वे विवाह करें और बच्चे जनें (उसी क्रम में) ताकि मनुष्य जाति बनी रहे।[1]

(2) जवानों को यह समझने की आवश्यकता होती है कि उनके लिए गए निर्णय आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करेंगे। अब्राहम और लूत के चरवाहों में झगड़ा होने पर, अब्राहम ने लूत को यह चुनने का अधिकार दे दिया कि वह जहां चाहे रह सकता है। लूत ने सदोम में रहना चुना था (उत्पत्ति 13:10, 11)। यह ऐसा निर्णय था कि उसके भयंकर परिणाम उसके परिवार को भुगतने पड़े।[2] बुरे निर्णयों के देर तक रहने वाले प्रभाव निर्गमन 20:5, 6 में भी दिखाए गए हैं:

> तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा किया करता हूं।

ये आयतें यह नहीं बतातीं कि बच्चे अपने माता-पिता का दोष मीरास में पाते हैं, बल्कि यह हमें याद दिलाती हैं कि बच्चों को तीसरी या चौथी पीढ़ी तक अपने माता-पिता के पापों के परिणाम भुगतने पड़ते हैं।[3] इसके विपरीत परमेश्वर ने कहा कि यदि इस्राएली लोग आज्ञाकार होते तो उसकी सन्तान आने वाली कई पीढ़ियों तक आशीषित होनी थी।[4]

(3) माता-पिता के अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के ढंग से उनके परपोते-परपोतियां ही नहीं आगे उनकी सन्तान प्रभावित भी होगी। परमेश्वर ने पांचवीं आज्ञा सुनाने के बाद भी ''अपने माता और पिता का आदर कर'' यह नियम स्वयं बताया और इसे मानने का कारण भी जोड़ा, ''जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें बहुत दिन तक तू रहने पाए'' (निर्गमन

20:12)। इस आयत में यह चेतावनी थी कि यदि बच्चे विद्रोही होंगे तो जाति को निर्वासन सहना पड़ेगा। पौलुस ने नई वाचा के अधीन बच्चों के लिए यही नियम बताया (इफिसियों 6:1, 2)। आज भी विद्रोही बच्चों का आने वाली पीढ़ियों के लिए नकारात्मक प्रभाव ही होगा। अनुभव बताता है कि बच्चों का अज्ञाकार होना या न होना अधिकतर इस पर निर्भर करता है कि उनके माता-पिता ने बचपन से उन्हें अधिकार वालों का आदर करना सिखाया है या नहीं।

इसलिए आपके परपोते-पोतियां आशीषित होते हैं या श्रापित, यह कम से कम, कुछ सीमा तक इस पर निर्भर करता है कि आपने अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया। आप अपने बच्चों को उस ढंग से जिससे आपके परपोते-पोतियों को सुनहरा भविष्य मिलने में सहायता मिले कैसे सिखा सकते हैं?

अपने स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान करें

पहले अपना ध्यान रखें। आपको और आपके पति या पत्नी को अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। वरना आप उतनी उम्र तक नहीं पहुंच पाएंगे जो कि अपने नाती-पोतों को देख सकें। अपना ध्यान क्यों रखें?

परमेश्वर ने आपके शरीरों को इस्तेमाल के लिए बनाया है, पर वे हैं उसी के। आपको जान-बूझकर उनका दुरुपयोग करने का कोई अधिकार नहीं (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

पवित्र आत्मा मसीही लोगों में वास करता है, जिस कारण आप परमेश्वर का निवास स्थान हैं (प्रेरितों 2:38; 5:32; गलातियों 4:6; 1 कुरिन्थियों 3:16; रोमियों 8:9)। यदि आपका पति या पत्नी और आप मसीह नहीं हैं तो यह आपको अपने शरीरों का ध्यान रखने की विशेष ज़िम्मेदारी देता है।

विवाह होने पर आप एक-दूसरे व्यक्ति की देखभाल की ज़िम्मेदारी जोड़ लेते हैं, जो ऐसा कार्य है कि इसे आप बीमारी होने और जवानी में मर जाने पर पूरा नहीं कर सकते। इसलिए आप पर पूरी कोशिश से स्वस्थ रहने और जब तक हो सके जीवित रहने की ज़िम्मेदारी है।[5]

अपने विवाह पर ध्यान दें

दूसरा अपने विवाह को सम्भालें। आपका विवाह खुशहाल होने अर्थात देर तक चलने पर विवाह के निभ जाने के विपरीत आपके बच्चे अधिक सफल होंगे और उनके साथ-साथ उनके बच्चे भी। झगड़े वाले घर में बड़े होने वाले बच्चे को जवान होते और विवाह हो जाने के बाद उनको ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वास्तव में किसी भी और बात से बढ़कर बच्चों को जिस बात की अधिक आवश्यकता है शायद वह विश्वास है कि उनके पिता और माता एक-दूसरे से प्रेम करते और एक-दूसरे को समर्पित हैं। ऐसे विश्वास से सुरक्षा की वह भावना मिलती है जो कहीं और से नहीं मिल सकती। जब आप अपने रोमांस को बनाए रखें कि सृजनात्मक ढंगों को खोजते और विवाह को काम करते रहने के लिए परमेश्वर के निर्देशों का समझदारी से पालन करके अपने साथी की आवश्यकताओं को पूरा करने की पूरी कोशिश करते हैं तो आप न केवल अपने जीवन और समाज को आशीषित कर रहे हैं, बल्कि आप अपने नाती-पोतों को भी आशीषित कर रहे हैं।

अपने नमूने पर ध्यान दें

वैसे लोग बनें जैसे आपके बच्चे चाहते हैं कि आप बनें। बच्चों को सही बातें सिखाना तो आवश्यक है पर इससे भी आवश्यक आपके लिए अपने बच्चों के सामने सही नमूना देना है। कई बार आपके बच्चे आपकी बात पर उतना ध्यान नहीं देंगे पर वे जो आप करते हैं और जैसे करते हैं उस ध्यान देते हुए आपके जैसा बन जाएंगे।[6] जिस कारण उनके बच्चे भी आम तौर पर उन्हीं के पदचिह्नों पर चलेंगे। इसलिए यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे ईमानदार हों, तो आपको ईमानदार होना आवश्यक है। यदि आप चाहते हैं कि वे मेहनती हों, तो आपको मेहनती होना आवश्यक है। यदि आप उन्हें शिष्टाचारी बनाना चाहते हैं तो आपको शिष्टाचारी बनना आवश्यक है। यदि आप चाहते हैं कि वे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने को पहल दें, तो आपको अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य को पहल देनी होगी। सबसे बढ़कर यदि आप चाहते हैं कि उनका जीवन परमेश्वर की इच्छा से चले तो आपको उनके सामने मसीही जीवन जीने का धर्म बताना आवश्यक है।

यह सच है कि आपके बच्चे ''प्रवचन को सुनने के बजाय देखना पसन्द करेंगे।'' यदि आप चाहते हैं कि आपके नाती-पोते महान बनें तो आपको भला और भक्तिपूर्ण जीवन जीने का ढंग बताने के लिए अपने पूरे जीवन को प्रवचन बनाना होगा।

अपनी शिक्षा पर ध्यान दें

चौथा, अपने बच्चों का प्रभु के अनुशासन और शिक्षा में पालन-पोषण करें। इफिसियों 6:4 में पौलुस की ताड़ना पिताओं के लिए लिखी गई थी, पर यह देखने की कि घर में बच्चों को परमेश्वर का वचन बताया जा रहा है, ज़िम्मेदारी माता-पिता दोनों की थी।

घर में वे बच्चे जिनके बचपन की यादों में अपने माता-पिता के साथ गाना और प्रार्थना करना और उन्हें बाइबल की कहानियां बताना शामिल है। ऐसे बच्चों के बड़े होकर मसीही बनने की सम्भावनाएं अधिक हैं, और अपने बच्चों को मसीही बनने की शिक्षा देने की सम्भावनाएं उनकी अपेक्षा अधिक हैं, जिनकी यादों में ऐसी कोई बात नहीं होती।

अपनी नागरिकता पर ध्यान दें

अपने बच्चों को ज़िम्मेदार, उपयोगी नागरिक बनाने के लिए बड़ा करें। आपके नाती-पोतों की आवश्यकता है कि कोई उनका पालन-पोषण करे। इस काम के लिए उन्हें माता-पिता की आवश्यकता है जो जेल से बाहर रहकर अपनी सहायता कर सकें और ज़िम्मेदारी से उनकी देखभाल करें। आपके नाती-पोतों का इन योग्यताओं के अनुसार जीना या न जीना कुछ हद तक इस पर निर्भर करता है कि आपने उनका पालन-पोषण कैसे किया। इसका अर्थ है कि जब आपके बच्चे हों तो आप उन्हें ज़िम्मेदार, कानून का पालन करने वाले बनाना सिखाने की पूरी कोशिश करें।[7]

अपने बच्चों को उपयोगी नागरिक बनाने में सहायता के काम में कई नियम और गतिविधियां हैं। उन्हें काम करना सीखने और ज़िम्मेदारी को मानने में सहायता करें। उन्हें दूसरों के साथ सही व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना और अच्छे नागरिक बनना सिखाएं। उन्हें सीखने में

और जहां तक हो सके अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने में सहायता करें। उन्हें अपने गुणों और कुशलताओं को बढ़ाने को प्रोत्साहित करें। प्रतिदिन के जीवन के काम जैसे धन का लेन देन, समस्याओं को सुलझाने, समय के प्रबन्धन और ऐसी छोटी-छोटी बातों से व्यवहार करने में अगुआई दें।

अधितर माता-पिता इन ज़िम्मेदारियों को उनके परिणामों पर अधिक विचार किए बिना मान लेते हैं। परन्तु जब आप अपने बच्चों को समाज के उपयोगी लोग बनने में सहायता कर रहे हैं, तो आप परदादा या परदादी बनने के लिए अपने आपको तैयार कर रहे हैं।

अपने बच्चों के विवाह पर ध्यान दें

छठा, अपने बच्चों को मसीह लोगों को मसीही व्यक्ति से विवह करने को प्रोत्साहित करें। आपको न केवल उन्हें वह ढंग बताना है, जिसमें मसीही बनने के लिए उन्हें बढ़ना है बल्कि आपको उन्हें बड़े होने पर मसीही जीवन साथी चुनने के लिए प्रोत्साहित करने की भी पूरी कोशिश करनी चाहिए। कैसे? स्पष्टतया आप अपने बच्चों को मसीही जीवन साथी के होने का महत्व बता सकते हैं। क्या आप इतना ही कर सकते हैं?

कई माता-पिता इस पर आपत्ति कर सकते हैं कि उनका अपने बच्चों पर कोई नियन्त्रण नहीं है कि वे किससे विवाह करेंगे। परन्तु ऐसे समाजों में जहां युवकों और युवतियों द्वारा अपने जीवन साथी को चुना जाता है, माता-पिता भी अपनी पसन्द बता सकते हैं। माता-पिता के रूप में आप बहुत हद तक आप इस बात पर नियन्त्रण रख सकते हैं कि आपका बच्चा कैसे लोगों से संगति रखता है। कम से कम अधिकतर मामलों में आपका बेटा या आपकी बेटी उन्हीं में से विवाह के लिए किसी को चुनेगा जिनके साथ रहता या रहती है। परिणाम यह होगा कि यदि आप अपने बच्चे को मसीही लोगों के साथ जुड़े होने को प्रोत्साहित करते या प्रबन्ध करते हैं, तो बच्चे के अधिकतर विवाह की सम्भावना किसी मसीही से ही होगी।

उदाहरण के लिए, जो माता-पिता ऐसा कर सकते हैं वे यह जानते हुए कि मसीही स्कूल या कॉजेल में अधिकतर सहपाठी मसीही होंगे, अपने बच्चों को वहां भेजना चुन सकते हैं। ऐसे ही माता-पिता को मसीही जवानों के साथ संगति रखने के लिए अपने बच्चों को प्रोत्साहित करने के अन्य अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। आपके क्षेत्र की कलीसिया युवाओं के लिए कार्यक्रम बना सकती है या चर्च कैंप लगा सकती है। यह पक्का नहीं है कि बच्चा मसीही व्यक्ति से ही विवाह करना चुने, चाहे उसने अधिकतर समय अन्य मसीही लोगों के साथ ही बताया हो। तौभी वे बच्चे जिनके अधिकतर मित्र कलीसिया के भीतर हैं उनकी अपेक्षा जिनके अन्य मसीही युवाओं के साथ कोई संगति नहीं है मसीही लोगों से विवाह करने की अधिक सम्भावना है।

जीवन साथी का चयन करने में ''समीपता की सामर्थ'' मेरे जीवन में दिखाई देती है। मैं अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (अब अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी) में पढ़ा। वहां मुझे सुन्दर शार्लट शैनन मिल गई और मैंने उससे विवाह कर लिया। क्या मेरा ए.सी.सी. में एक मसीही स्त्री से मिलना और विवाह करना संयोग था? मुझे नहीं लगता। ए.सी.सी. में पढ़ाई के दौरान मेरी पूरी नीयत स्कूल की किसी मसीही लड़की से मिलकर उससे विवाह करने की थी, और मैंने कर लिया!

स्पष्टतया अपने बच्चों के जीवनों में ''समीपता की सामर्थ'' पर मसीही माता-पिता का कुछ प्रभाव होता है। उन्हें इसका इस्तेमाल मसीही लोगों से विवाह करने के लिए अपने बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए करना चाहिए। यदि वे करते हैं तो वे अपने बच्चों की सहायता कर रहे हैं, पर वे अपनी भी सहायता कर रहे होते हैं! वे परपोतो-परपोतियों के होने की नींव रख रहे होते हैं!

सारांश

व्यस्कों और बच्चों में एक बड़ा अन्तर यह है कि बच्चे आमतौर पर केवल वर्तमान के लिए जीते हैं। उन्हें वही चाहिए जिसे वे अब चाहते हैं, और उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके कामों का परिणाम क्या हो सकता है। इसके विपरीत परिपक्व वयस्क वर्तमान से नीचे की ओर देखते हैं। वे उनके कामों के परिणामों पर विचार करते हैं। उनके लक्ष्य दीर्घकालीन हैं और वे उन लक्ष्यों को पाने के लिए त्वरित सन्तुष्टि को त्याग देने को तैयार हैं।

विवाह होने पर आपको न केवल जीविका कमाने के ढंग को पहले से सोचकर बल्कि दूर तक भविष्य के मामलों पर विशेषकर इस जीवन की आगे की चिन्ताओं पर विचार करके अपनी परिपक्वता को दिखाना आवश्यक है।

इस जीवन में महत्वपूर्ण विचार की बातों में यह सम्भावना है कि आपके नाती-पोते। आप पक्का नहीं कह सकते कि आपके परपोते-पोतियां निष्पक्ष दृष्टिकोण से होंगे । परन्तु आप अपने जीने के ढंग की योजना ऐसे बना सकते हैं कि आपको यह अद्‌भुत आशीष मिलने की अधिक सम्भावना है। परमेश्वर आपको अपने बच्चों का पालन-पोषण ऐसे करने में सहायता दे जिससे आपके नाती-पोते सचमुच में महान हों!

टिप्पणियां

[1]बेशक किसी दम्पत्ति का नि:संतान होना कोई पाप नहीं है। [2]देखें उत्पत्ति 19. लूत की सन्तान (मोआबियों और अमोनियों) और इस्राएलियों के बीच झगड़ा अगली सदियों तक रहा। [3]''यह संसान परमेश्वर का है, और हम सब एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, इस कारण एक पीढ़ी द्वारा परमेश्वर के नियमों को तोड़ना वास्तव में भावी पीढ़ियों के लोगों को प्रभावित करता है'' (*टिण्डेल ओल्ड टैस्टामैंट कमैंट्री* [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1973], 156) में आर. एलन. एक्सोडस। निर्गमन की आयतें संकेत देती हैं कि यह सन्तान यहोवा से भी ''घृणा'' करते हैं जो उनके माता-पिता के पापों का एक और सम्भावित परिणाम है। [4]''हज़ारों'' सम्भवतया पीढ़ियों के लिए कहा गया है। अतिश्योक्ति की भाषा में कहें तो यहोवा कह रहा था कि वह हज़ारवीं पीढ़ी पर करुणा दिखाता है जबकि तीसरी या चौथी पीढ़ी को ही दण्डित करता है(देखें NRSV)। [5]बीमारी और मृत्यु अपरिहार्य हैं। इस पद्य की ताड़ना विवाह के दोनों पक्षों को जहां तक हो सके स्वस्थ रहने की पूरी कोशिश करना है। उदाहरण के लिए कुछ बीमारियों को हाथ धोने या तम्बाकू के सेवन, शराब पीने जैसी बुरी आदतों से दूर रहकर साफ़ सफ़ाई के द्वारा रोक लगाई जा सकती है। [6]आवश्यक नहीं कि अच्छाई के लिए हो या बुराई के लिए, बच्चे अपने माता-पिता के पदचिह्नों पर ही चलें क्योंकि हर व्यक्ति की अपनी स्वतन्त्र इच्छा है और वह व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार है (देखें यहेजकेल 18)। [7]उपयोगी नागरिक बनने में बच्चों की सहायता के लिए नीतिवचन की पुस्तक अच्छी है, जो वचन, परिश्रम, अधिकार का सम्मान, बोलचाल में मधुर होने की आवश्यकता और जीवन के हर क्षेत्र में अच्छा निर्णय (बुद्धि) देने के महत्व को बताती है।